नजानू की कहानियां

४

निकोलाई नोसोव

नजानू कवि कैसे बना

रादुगा प्रकाशन · मास्को

नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

नजानू कवि कैसे बना

अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन

चित्रकार बनने में असफल रहने के बाद नजानू ने ठानी कि वह कवि बनेगा और कविताओं की रचना करेगा। उसकी जान-पहचान एक कवि से थी जो डैंडेलियनवाली गली में रहता था। इस कवि का असली नाम पंसेरिया था मगर, जैसा कि सभी जानते हैं, सारे कवि चाहते हैं कि उनका नाम ख़ूबसूरत सा हो। इसीलिए जब पंसेरिया कविताएं लिखने लगा तो उसने अपने लिए एक दूसरा नाम चुन लिया और वह गुलदस्ता के नाम से जाना जाने लगा।

एक दिन नजानू गुलदस्ता के पास आया और उसने कहा: "गुलदस्ता, सुनो, तुम मुझे कविता रचना सिखा दो। मैं भी कवि बनना चाहता हूं।"

"तुममें कविता रचने की प्रतिभा है?" गुलदस्ता ने पूछा।

"है कैसे नहीं। मैं बहुत प्रतिभाशाली हूं," नजानू ने उत्तर दिया।

"इसकी परख करना आवश्यक है," गुलदस्ता ने कहा। "तुम जानते हो तुक क्या होता है?"

"तुक? नहीं, मैं तो नहीं जानता।"

"तुक उसको कहते हैं जब दो शब्दों का अंत एक ही प्रकार होता है," गुलदस्ता ने समझाया, "जैसे चिड़िया-गुड़िया, घोड़ा-थोड़ा, समझे?"

"हां, समझ गया।"

"अच्छा 'छड़ी' शब्द का तुक बताओ।"

"'झाड़ी'," नजानू ने जवाब दिया।

"यह कैसा तुक है: छड़ी-झाड़ी? इन शब्दों से तुक नहीं बनता।"

"क्यों नहीं? इनका अंत तो एक ही प्रकार होता है।"

"मगर इतना ही काफ़ी नहीं है," गुलदस्ता ने कहा, "यह आवश्यक है कि शब्द

एक ही प्रकार के हों और कविता का जोड़ बैठ सके। लो सुनो : छड़ी-घड़ी, भट्टी-खट्टी, किताब-हिसाब।"

"समझ गया, समझ गया!" नजानू चिल्लाया, "छड़ी-घड़ी, भट्टी-खट्टी, किताब-हिसाब। शाबाश! हा-हा-हा!"

"अच्छा अब 'झोंटा' शब्द का तुक बताओ," गुलदस्ता ने कहा।

"'ठोंटा'" नजानू ने जवाब दिया।

"'ठोंटा' क्या?" गुलदस्ता ने ताज्जुब से पूछा, "ऐसा भी कोई शब्द है?"

"है क्यों नहीं?"

"बिल्कुल नहीं है।"

"अच्छा तो फिर 'उलठोंटा'।"

"यह 'उलठोंटा' क्या चीज़ है?" गुलदस्ता ने फिर ताज्जुब से पूछा।

"जब उलटी हो जाती है तो उसमें जो निकलता है वह 'उलठोंटा'," नजानू ने समझाया।

"तुम हवाई उड़ा रहे हो," गुलदस्ता बोला, "इस प्रकार का कोई शब्द नहीं है। ऐसा शब्द चुनना चाहिये जो इस्तेमाल होता है। ऐसा नहीं जो स्वयं गढ़ लिया हो।"

"और अगर मुझे इस्तेमाल में लाया जानेवाला शब्द न मिल सके तो?"

"इसका मतलब यह है कि तुममें कविता रचने की प्रतिभा नहीं है।"

"तो तुम स्वयं बताओ इस शब्द के तुक," नजानू ने उत्तर दिया।

"अभी लो," गुलदस्ता राज़ी हो गया।

वह कमरे के बीचों-बीच खड़ा हो गया। उसने अपने हाथ छाती पर रखे और सर एक तरफ़ झुकाकर सोचने लगा। फिर उसने अपना सर ऊपर उठाया और छत की ओर ताकते हुए फिर सोचने लगा। इसके बाद उसने अपनी ठोड़ी हाथ से पकड़ ली और फ़र्श

की ओर टकटकी बांधे फिर सोचने लगा और अपने आप धीरे-धीरे बुदबुदाने लगा :

"'झोंटा', 'कोंटा', 'खोंटा', 'गोंटा', 'योंटा', 'रोंटा ... " वह बहुत देर तक यों ही बड़बड़ाता रहा और फिर बोला : "उफ़! इस शब्द को क्या हो गया? यह कैसा शब्द है, जिसका कोई तुक ही नहीं है!"

"देखा न!" नजानू ने प्रसन्न होकर कहा। "ख़ुद ही ऐसा शब्द दिया जिसका कोई तुक ही नहीं है और उस पर कहते हो कि मुझमें कविता रचने की प्रतिभा नहीं है।"

"है प्रतिभा, बस, रहने दो!" गुलदस्ता ने कहा। "मेरा तो सर दर्द करने लगा। इस तरह कविताओं की रचना करो कि उनमें कोई विचार हो और तुक भी। बस तुम्हारी कविता तैयार।"

"मतलब, यह तो बहुत आसान है?" नजानू ने ताज्जुब से कहा।

"बिल्कुल, बहुत आसान है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रचना से प्रतिभा का पता चले।"

नजानू घर चला गया और फ़ौरन कविता रचने लगा। सारे दिन वह कमरे में टहलता रहा। अपनी ठोड़ी को हाथ में पकड़े कभी वह फ़र्श को ताकता कभी छत को और अपने आप से कुछ बड़बड़ाता जाता।

अंत में कविताएं तैयार हो गयीं और वह बोला :

"भाइयो, सुनो मैंने कुछ कविताएं रची हैं।"

"अच्छा! ये कविताएं किसके बारे में हैं?" सबने जानना चाहा।

"ये कविताएं तुम लोगों के बारे में हैं," नजानू ने स्वीकार किया, "लो, सबसे पहली कविता जानू के बारे में :

"जानू गया टहलने नदी के तट पर,
जाते-जाते कूद गया भेड़ के ऊपर।"

"क्यों ? " जानू चिल्लाया, "मैं भेड़ के ऊपर कब कूदा ? "

"अरे, ऐसा तो सिर्फ़ कविता में हुआ, तुक मिलाने के लिए," नजानू ने समझाया।

"यानी तुक मिलाने के लिए तुम मेरे बारे में ऐसी झूठी बात कहोगे ? " जानू ने आगबबूला होकर कहा।

"और क्या," नजानू ने उत्तर दिया, "मुझे सच्ची बात कहने की क्या पड़ी है ? जो सच है वह तो है ही।"

"ठीक है ! ज़रा फिर तो ऐसा करके देखो तब पता चलेगा ! " जानू ने धमकी दी। "अच्छा, आगे देखें तुमने औरों के बारे में क्या कहा है ? "

"लो जल्दबाज़ के बारे में सुनो," नजानू बोला :

“जल्दबाज़ को भूख लगी,
निगल गया इस्तरी ठंडी।”

“भाइयो”, जल्दबाज़ चिल्लाया, “यह मेरे बारे में इसने क्या लिखा है? मैंने ठंडी इस्तरी नहीं निगली।”

“हां, हां, मगर तुम चिल्लाओ नहीं,” नजानू ने उत्तर दिया, “यह तो मैंने तुक मिलाने के लिए कहा है कि तुमने ठंडी इस्तरी निगल ली।”

“मगर मैंने तो किसी प्रकार की इस्तरी नहीं निगली, न गरम, न ठंडी,” जल्दबाज़ चिल्लाया।

"मैं तो यह नहीं कह रहा हूं कि तुमने गरम इस्तरी निगल ली। शांत हो जाओ," नजानू ने उत्तर दिया। "अब सुनो एक कविता कदाचित् के बारे में:

"कदाचित् के तकिये के नीचे देखो,
पड़ा मीठा पनीर का टुकड़ा देखो।"

कदाचित् अपने पलंग के पास गया। उसने तकिये को उठाकर उसके नीचे देखा और कहा:

" झूठ ! यहां कोई भी पनीर का टुकड़ा नहीं है।"

" तुम कविता के बारे में कुछ भी नहीं समझते," नजानू ने जवाब दिया, " ऐसा सिर्फ़ तुक मिलाने के लिए कहा गया है कि पनीर का टुकड़ा तकिये के नीचे पड़ा है। असल में थोड़े ही पड़ा है। मैंने डाक्टर टिकियावाला के बारे में भी कविता लिखी है।"

" भाइयो," डाक्टर टिकियावाला चिल्लाये, " इस बकवास को बन्द करना चाहिये। क्या हम चुपचाप यह सब सुनते जायेंगे जो झूठ यह सबके बारे में बघार रहा है?"

" बहुत हो गया!" सब चिल्लाये, " हम और सुनना नहीं चाहते। यह कविता नहीं है। यह तो हमें चिढ़ाना है।"

सिर्फ़ जानू, जल्दबाज़ और कदाचित् ने चिल्लाकर कहा, " पढ़ने दो! जैसे उसने हमारे बारे में कविताएं पढ़ीं, उसी तरह वह और लोगों के बारे में भी पढ़ेगा।"

" हमें नहीं चाहिये। हम नहीं सुनेंगे," दूसरे लोग चिल्लाये।

"अगर तुम लोग सुनना नहीं चाहते हो तो मैं जाकर पड़ोसियों को सुनाऊंगा," नजानू ने कहा।

"क्यों?" सब चीख़े, "तुम अब पड़ोसियों के सामने हमें शर्मिंदा करोगे? ज़रा कोशिश करके तो देखो! हो सकता है उसके बाद तुम घर ही न लौट सको।"

"अच्छा, तो ठीक है, भाइयो, नहीं पढूंगा," नजानू ने सब की बात मान ली। "सिर्फ़ तुम लोग मुझ पर नाराज़ न हो।"

तब से नजानू ने फ़ैसला किया कि वह और कविताएं नहीं रचेगा।

КАК НЕЗНАЙКА СОЧИНЯЛ СТИХИ

На хинди

N. Nosov

HOW DUNNO BECAME A POET

In Hindi

H $\frac{4803010102-039}{031(05)-85}$ 367–85

सोवियत संघ में मुद्रित
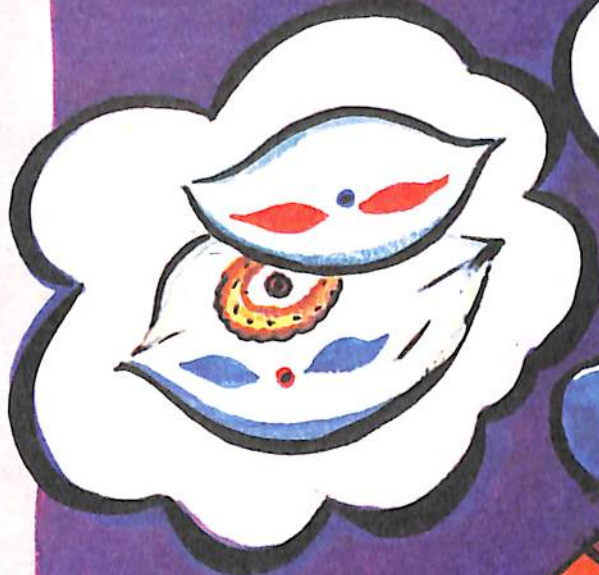
अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं :

नजानू ने गैस की मोटर को कैसे चलाया

जानू ने उड़न-गुब्बारा कैसे बनाया

ISBN 5-05-000408-x